भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या- 3754
दिनांक 21 दिसम्बर, 2021 के लिए प्रश्न

देसी नस्ल के मवेशियों का संरक्षण

3754. श्री प्रज्ज्वल रेवन्ना:
क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा मवेशियों की देसी नस्लों विशेष रूप से कर्नाटक राज्य की मूल नस्लों हल्लीकर अमृतमहल, खिलारी आदि के संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;
क्या सरकार ने मवेशियों की ऐसी नस्लों की गणना की है, यदि हां, तो क्य हाल के वर्षों में इनकी संख्या घट रही है या बढ़ रही है;
(ख) क्या सरकार ने मवेशियों की ऐसी नस्लों की गणना की है, यदि हां, तो क्या हाल के वर्षों में इनकी संख्या घट रही है या बढ़ रही है;
(ग) क्या भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कर्नाटक के पशुपालन और पशुचिकित्सा विभाग के सहयोग से ऐसी नस्लों के संरक्षण के लिए क्या उपाय किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस संबंध में अब तक स्वीकृत और उपयोग की गई निधि का ब्यौरा क्या है; और
(घ) कर्नाटक राज्य में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के कार्यान्वयन की स्थिति क्या है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री
(श्री परशोत्तम रूपाला)

(क) भारत सरकार देशी बोवाइन नस्लों के विकास और संरक्षण, बोवाइन आबादी के आनुवंशिक उन्नयन और दुग्ध उत्पादन और बोवाइनों की उत्पादकता में वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ राष्ट्रीय गोकुल मिशन लागू कर रही है। कर्नाटक के हल्लीकर, अमृतमहल, खिलारी सहित सभी गोपशुओं और भैंसों की नस्लों को इस योजना के तहत कवर किया गया है। देशी बोवाइन नस्लों के विकास और संरक्षण के लिए योजना के तहत निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

(i) देशी नस्लों के उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों के सीमेन सहित उच्च गुणता वाले सांडों के सीमेन का उपयोग करके राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का कार्यान्वयन। घटक के तहत अब तक 2.37 करोड़ पशुओं को कवर किया गया है, 2.87 करोड़ कृत्रिम गर्भाधान किए गए हैं और 1.5 करोड़ किसान लाभान्वित हुए हैं।

(ii) गोपशु की गिर, साहीवाल, थारपरकर, कांकरेज, हरियाणा, राठी नस्लों और भैंस की मुर्रा, मेहसाणा, जाफराबादी, पंढारपुरी, नील रवि नस्लों जैसी देशी नस्लों के सांडों सहित उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों के उत्पादन के लिए संतति परीक्षण और वंशावली चयन का कार्यान्वयन। अब तक देशी नस्लों के 2332 उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों का उत्पादन किया गया है और सीमेन उत्पादन के लिए सीमेन स्टेशनों को उपलब्ध कराया गया है।

(iii) गोपशुओं और भैंसों की देशी नस्लों सहित बोवाइन आबादी के तेजी से आनुवंशिक उन्नयन के लिए आईवीएफ का कार्यान्वयन। घटक के तहत 30 आईवीएफ प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए परियोजनाओं को संस्वीकृत किया गया है, इनमें से 17 प्रयोगशालाओं को चालू कर दिया गया है और 13 आईवीएफ प्रयोगशालाओं में कार्य प्रगति पर है। आज की तिथि तक तक देशी नस्लों के 12438 व्यवहार्य भ्रूणों का उत्पादन किया जा चुका है, 5864 भ्रूणों को स्थानांतरित किया गया है, 951 बछड़ों का जन्म हुआ है और 5976 भ्रूणों का भंडारण किया जा रहा है।

(iv) जीनोमिक चयन के कार्यान्वयन के लिए, सांडों की आनुवंशिक गुणता को साबित करने के लिए पारंपरिक पद्धति में लगने वाले 6-7 वर्ष के मुकाबले कम उम्र में देशी बोवाइन नस्लों के उच्च आनुवंशिक गुणता वाले सांडों की पहचान के लिए डीएनए चिप विकसित की गई है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड ने देशी नस्लों के पशुओं सहित

गोपशुओं और भैंसों के जीनोमिक चयन के लिए इंडुस चिप और बफ चिप विकसित की है। आईसीएआर-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो ने विशेष रूप से देशी नस्लों के पशुओं के जीनोमिक चयन के लिए कम घनत्व वाली डीएनए चिप विकसित की है।

(v) देश में देशी नस्लों के गोपशुओं के साथ-साथ अन्य बोवाइन नस्लों के लिए सेक्स सोर्टेड सीमेन का उत्पादन शुरू किया गया है। सेक्स सोर्टेड सीमेन 90% सटीकता के साथ मादा बछियों के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है। अब तक सरकारी सीमेन स्टेशनों से लगभग 10 लाख सेक्स सोर्टेड सीमेन खुराकों का उत्पादन किया गया है और मेहसाणा दुग्ध संघ, बीएआईएफ और एबीएस चितले के सीमेन स्टेशनों से 18 लाख वीर्य खुराकों का उत्पादन किया गया है।

(vi) देशी नस्लों के गोपशुओं और भैंसों का वैज्ञानिक और समग्र रूप से विकास और संरक्षण करने के लिए 16 गोकुल ग्रामों की स्थापना के लिए राज्यों को निधियां जारी की गई हैं, जिसमें से 14 गोकुल ग्राम को चालू कर दिया गया है और शेष 2 गोकुल ग्रामों पर कार्य प्रगति पर है। देशी नस्लों के जर्मप्लाज्म के भंडार के रूप में दो राष्ट्रीय कामधेनु प्रजनन केंद्र स्थापित किए गए हैं।

कर्नाटक राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत भाग ले रहा है और योजना की शुरुआत से 51.35 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है। कर्नाटक में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत हल्लीकर, अमृतमहल, खिलारी नस्ल के गोपशुओं के विकास और संरक्षण के लिए निम्नलिखित विशिष्ट प्रयास किए गए हैं:

(i) अमृतमहल नस्ल के गोपशुओं के वैज्ञानिक और समग्र विकास के लिए लिंगदाहल्ली, चिक्कमगलूर जिले में गोकुल ग्राम की स्थापना के लिए राज्य को निधियां जारी की गई हैं, जहां कुल एक हजार गायों को शामिल किया जा रहा है और कार्य प्रगति पर है।

(ii) राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राज्य को धनराशि जारी की गई है। कार्यक्रम के तहत सभी देशी नस्लों (हल्लीकर, अमृतमहल, मलनाड गिद्दा, खिलारी, कृष्णा वैली, देवनी, गिर, साहीवाल, थारपरकर आदि) के उत्कृष्ट सांडों के सीमेन का उपयोग गोपशु की हल्लीकर, अमृतमहल और खिलारी सहित सभी देशी नस्लों के आनुवंशिक उन्नयन के लिए किया गया है।

(iii) कृत्रिम गर्भाधान (एआई) तकनीशियनों (मैत्री) को शामिल करने और स्वदेशी नस्लों के उत्कृष्ट सांडों के साथ देशी नस्लों के बीच एआई कवरेज सहित एआई कवरेज का विस्तार करने के लिए मौजूदा एआई नेटवर्क को मजबूत करने के लिए निधियां जारी की गई हैं।

(iv) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) द्वारा वित्त पोषित- जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (एनएएफसीसी) परियोजना- "कर्नाटक में जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर पशुधन की देशी क़िस्मों (गोपशु और भेड़) का संरक्षण और पुनरुद्धार" के तहत गोपशु की देशी नस्लों (अमृतमहल, हल्लीकर और मलनाड गिद्दा) का संरक्षण और पुनरुद्धार भी किया जा रहा है।

(v) कर्नाटक राज्य सरकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार, गोपशु की अमृतमहल, हल्लीकर और मलनाड गिद्दा नस्ल सहित देशी बोवाइन नस्लों के विकास और संरक्षण के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं: (क) अमृतसिरी योजना जिसके अंतर्गत राज्य सरकार के फार्मों पर अनुरक्षित सभी देशी नस्लों की मादा बछियों, हीफर्स और गाय को, संरक्षण और प्रचार के लिए 25% बुक वैल्यू पर, संबन्धित नस्ल के देशी प्रजनन क्षेत्र के किसानों को वितरित किया जाता है; (ख) अमृतधारा योजना जिसके तहत राज्य सरकार के फार्मों में अनुरक्षित कर्नाटक की सभी देशी नस्लों के नर बछड़ों और सांडों को, प्रजनन और भारवाही उद्देश्य के लिए, संबंधित नस्लों के देशी प्रजनन पथ के किसानों के साथ-साथ तालुकों के किसानों को भी वितरित किया जाता है, जिन्होंने बाजार मूल्य पर, पिछले 5 वर्षों में खुली नीलामी में भाग लिया था।

(ख) देशी नस्लों जैसे अमृतमहल, हल्लीकर और खिलारी की आबादी में नस्ल सर्वेक्षण 2012 और 20वीं पशुधन गणना 2019 के बीच गिरावट के रूझान दिखाई दिये हैं। हालांकि, देशी गोपशुओं की उत्पादकता में वर्ष 2015-16 और वर्ष 2019-20 (मूल पशु सांख्यिकी 2017 और 2020 के अनुसार) के बीच 13.6% (2.49 किलोग्राम प्रति पशु प्रति दिन से 2.83 किलोग्राम प्रति पशु प्रति दिन तक) की वृद्धि हुई है।

(ग) कर्नाटक सरकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) कर्नाटक के पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग के सहयोग से निम्नलिखित उपाय कर रही है

(i) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान दक्षिणी क्षेत्रीय स्टेशन (एनडीआरआई-एसआरएस), बैंगलोर को "कर्नाटक में जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर पशुधन की देशी क़िस्मों (गोपशु और भेड़) का संरक्षण और पुनरुद्धार" परियोजना में कर्नाटक पशुधन विकास एजेंसी के साथ जोड़ा गया है। एनडीआरआई-एसआरएस, बैंगलोर द्वारा हल्लीकर/मलनाड गिद्दा/अमृतमहल का जीनोमिक अध्ययन और गोपशु की मलनाड गिद्दा नस्ल की फील्ड प्रदर्शन रिकॉर्डिंग की जा रही है। परियोजना के तहत, 350.00 लाख रुपये की राशि संस्वीकृत की गई है, जिसमें से इस उद्देश्य के लिए 325.00 लाख रुपये जारी किए जा चुके हैं और अब तक 298.12 लाख रु. की राशि का उपयोग किया गया है।

(ii) आईसीएआर राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीएजीआर) पशुधन और कुक्कुट की देशी आबादी के लक्षणों के वर्णन पर कार्य कर रहा है और बाद में परिभाषित नस्लों के रूप में उनके पंजीकरण के लिए प्रयास करेगा। इसके अलावा, आईसीएआर-एनबीएजीआर ने राष्ट्रीय जीन बैंक में उपर्युक्त नस्लों के सीमेन की खुराकों को संरक्षित किया है और आईसीएआर-पशु आनुवंशिक संसाधनों पर नेटवर्क प्रोजेक्ट (एएनजीआर) के तहत गोपशु की कृष्णा वैली की नस्ल का इन-सिटू संरक्षण भी किया है।

(घ) कर्नाटक राज्य में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के कार्यान्वयन की स्थिति निम्नानुसार है:

(i) कर्नाटक के 17 जिलों में राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम लागू किया गया है और कार्यक्रम के तहत किसानों के द्वार पर गुणवत्तापूर्ण कृत्रिम गर्भाधान सेवाएं मुफ्त उपलब्ध कराई गई हैं। कार्यक्रम के तहत, अब तक 10.56 लाख पशु कवर किए गए, 139.91 लाख कृत्रिम गर्भाधान किए गए और 8.65 लाख किसान लाभान्वित हुए हैं।

(ii) प्रगति रिपोर्ट के अनुसार राज्य ने तरल नाइट्रोजन और परिवहन और वितरण प्रणाली को सुव्यवस्थित करने के लिए रणनीतिक स्थानों पर 12 तरल नाइट्रोजन भंडारण साइलो स्थापित किए हैं, 1329 मैत्री को प्रशिक्षित किया गया जिसमें से 550 को शामिल किया गया, 3 सीमेन स्टेशनों को सुदृढ़ किया गया, 1594 मौजूदा एआई तकनीशियनों और 784 पेशेवरों को प्रशिक्षित किया गया है। राज्य को अभी लिंगदाहल्ली में गोकुल ग्राम की स्थापना पूरी करनी है और ए2ए2 दूध के विपणन पर पायलट परियोजना का कार्यान्वयन शुरू करना है।

****